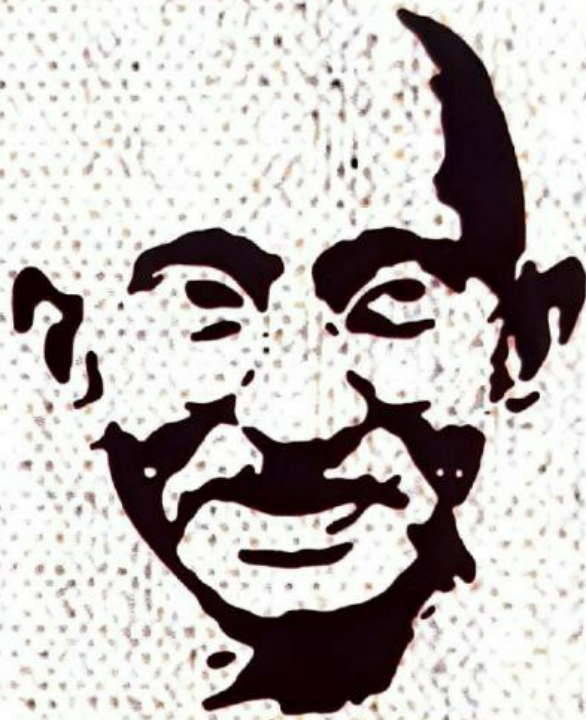


77

जुलाई-दिसम्बर, 2019



सनातन गाँधी से संवाद

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अनुक्रमणिका

न्याय की तलाश में गाँधी का सभ्यता विमर्श नंदकिशोर आचार्य	11
गाँधी को समझने का यही सही समय जगमोहन सिंह राजपूत	21
भारत की बहुभाषिकता और गाँधी का भाषा चिंतन राधावल्लभ त्रिपाठी	37
समकालीन विमर्शों के आलोक में हिन्द स्वराज का गाँधी दृष्टि से पुनरावलोकन विश्वनाथ मिश्र	43
गाँधी की कला दृष्टि और साहित्य-सूत्र सुधीर कुमार	74
गाँधी और गाँधी के बाद सर्वोदयी - विमर्श आभा नवनी	82
महात्मा गाँधी और भारतीय कविता पंकज चतुर्वेदी	105
इतिहास के विस्मरण के दौर में गाँधी की प्रासंगिकता हितेन्द्र पटेल	123
भारतीय समाज की आंतरिक गत्यात्मकता और गाँधी बृजेन्द्र पाण्डेय	134
गाँधी की गीतामाता और उसकी समसामयिक प्रासंगिकता ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव	148

गाँधी की गीतामाता और उसकी समसामयिक प्रासंगिकता

ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

भारत के इतिहास की सर्वप्रमुख विशेषता इसके आरंभ का आध्यात्मिक आधार है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में अन्तर्निहित आध्यात्मिक तत्वों ने प्राचीन भारतीय संस्कृति को उच्चता प्रदान की है। भौतिक प्रगति जहाँ हमें शारीरिक सुख देती है, वहीं मानसिक अशांति भी पैदा करती है। मानसिक शांति के लिये संतोष के लिये मनुष्य अध्यात्म का सहारा लेता है। भौतिक प्रगति के स्थायित्व के लिये, उसके लाभों को पाने के लिये, आध्यात्मिक आधार का होना आवश्यक है। महात्मा गाँधी यह जान गये थे कि विश्व तेजी से भौतिक प्रगति की ओर बढ़ रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं रह सकता। यह भौतिक प्रगति राजनीति को भी दूषित करेगी। मनुष्य को निराशा, असंतोष, चिन्ता एवं उद्वेग के भंवर में डाल देगी। ऐसी स्थिति में मनुष्य में आशा, संतोष, निश्चितता एवं धैर्य के गुण विकसित करने के लिये आध्यात्मिक आधार आवश्यक है। इस तारतम्य में दैनिक भास्कर, 2 अक्टूबर 2019 के अंक में उल्लेखित राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक डॉ. मोहन भागवत का यह कथन अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है कि - 'भारत आध्यात्मिक देश है। और आध्यात्मिक आधार पर ही उसका उत्थान होगा, इसे आधार बनाकर भारतीय राजनीति को आध्यात्मिक नींव पर खड़ा करने का प्रयोग महात्मा गाँधी ने किया।'

राजनीति ही नहीं गाँधीजी सामाजिक, आर्थिक, एवं शैक्षिक प्रगति की ऊँचाइयों की ओर बढ़ने के मूल में आध्यात्मिक मूल्यों पर अमल आवश्यक मानते थे। मनुष्य एवं प्रकृति एक दूसरे के पूरक है। प्रकृति भी चयन करती है। जो भी व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र को सर्वांगद उन्नति की ओर ले जाने के लिये संकल्पित होता है, प्रकृति ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करती है, कि वह व्यक्ति अपने पवित्र उद्देश्य में सफलता प्राप्त करे। गाँधीजी की जीवन यात्रा के आरंभ को हम देखे तो पाते हैं, कि उन्हें आरंभ से ही परिवार में धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा मिली। विलायत में जब उन्होंने गीता का अध्ययन किया तो उसमें अन्तर्निहित आध्यात्मिक मूल्यों की उपयोगिता उन्हें जीवन की समस्याओं को सुलझाने में लाभदायक लगी। उन्हीं आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा उन्होंने न केवल अपना जीवन ढाला अपितु लोगों को भी उन पर अमल करने की शिक्षा दी।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के 3 अक्टूबर 2019 के दैनिक भास्कर के सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित लेख में सत्य ही लिखा है कि - हम ये कैसे सुनिश्चित करें कि गाँधीजी के आदर्श भावी पीढ़ियों भी याद रखें, मैं विचारको, उद्यमियों और टेक्नोलॉजी लीडर्स को आमंत्रित करता हूँ कि वे इनोवेशन के जरिये